अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – द्वितीय कक्षा (5 जनवरी, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :– **10x1=(10)**

(a) अन्तराय कर्म की प्रकृतियाँ होती हैं –

क. 3 ख. 5

ग. 2 घ. 4 ( )

(b) प्रत्याख्यानावरण कषाय में मरने वाला जीव गति में जाता है –

क. मनुष्य गति ख. देव गति

ग. नरक गति घ. तिर्यंच गति ( )

(c) 'मेंढे के सींग के समान' माया होती है –

क. अनंतानुबंधी ख. अप्रत्याख्यानी

ग. प्रत्याख्यानावरण घ. संज्वलन ( )

(d) दूसरे देवलोक की गति है –

क. 40 ख. 20

ग. 46 घ. 50 ( )

(e) तीसरी नरक की आगति है –

क. 19 ख. 18

ग. 17 घ. 16 ( )

(f) तीसरे गुणस्थान में योग पाये जाते हैं –

क. 13 ख. 10

ग. 15 घ. 14 ( )

(g) पहले से लेकर छठे गुणस्थान तक के जीवों में लेश्या होती है –

क. 2 ख. 4

ग. 3 घ. 6 ( )

(h) निम्न में से रूपी है –

क. पुद्गलास्तिकाय ख. अठारह पापों का त्याग

ग. दृष्टि घ. संज्ञा ( )

(i) 5 उपयोग लेकर आते हैं 5 उपयोग लेकर निकलते हैं –

क. वाणव्यन्तर ख. पाँच अनुत्तर विमान

ग. पहला देवलोक घ. भवनपति ( )

(j) निम्न में से अरूपी है –

क. भाव लेश्या ख. वैक्रिय शरीर

ग. दो गंध घ. कार्मण शरीर ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में लिखिए – **10x1=(10)**

(a) मोहनीय कर्म का अबाधाकाल सात हजार वर्ष का होता है। .....

(b) बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय पर अनुकम्पा करने से दर्शनावरणीय का बंध होता है। .....

(c) गोत्र कर्म सोलह प्रकार से बान्धा जाता है और सोलह प्रकार से भोगा जाता है। .....

(d) चक्रवर्ती की गति, नरक होती है। .....

(e) वासुदेव मरकर मोक्ष में जाते हैं। .....

(f) उपशान्त मोहनीय गुणस्थान में गुणस्थान एक ही होता है। .....

(g) अनिवृत्ति बादर गुणस्थान में सात उपयोग होते हैं। .....

(h) संसार में जो भी पुद्गल दृष्टिगोचर होते हैं, वे अष्टस्पर्शी स्कंध होते हैं। .....

(i) पहले गुणस्थान में जीव के 12 भेद ही मिलते हैं। .....

(j) तिर्यंच पंचेन्द्रिय 5 उपयोग लेकर जाते हैं। .....

प्र.3 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए – **10x1=(10)**

(a) प्रचला–प्रचला	(क) 46	.....
(b) पर्वत की दरार के समान क्रोध	(ख) 16	.....
(c) अप्रत्याख्यानी कषाय की स्थिति	(ग) अनन्तानुबंधी	.....
(d) संज्वलन लोभ की	(घ) दर्शनावरणीय	.....
(e) मघा नरक की आगति	(च) 3	.....
(f) पहले किल्विषी की गति	(छ) 6	.....
(g) सास्वादन गुणस्थान में उपयोग	(ज) रूपी	.....
(h) अप्रमत्त संयत गुणस्थान में लेश्या	(झ) अरूपी	.....
(i) 3 दृष्टि	(य) अन्तर्मुहूर्त	.....
(j) पांच वर्ण	(र) एक वर्ष	.....

प्र.4 मुझे पहचानो – **10x2=(20)**

(a) मेरे द्वारा ज्ञान गुण आच्छादित होता है। .....

(b) मैं हल्दी फिटकरी के रंग के समान हूँ। .....

(c) मेरा छेदन–भेदन करके जीव अजर–अमर (मोक्ष) शाश्वत सुख को प्राप्त करता है। .....

(d) मेरा उदय होने पर साता व असाता उत्पन्न होती है। .....

(e) मेरी आगति 108 की तथा गति मोक्ष है। .....

(f) मेरी गति अमर है। .....

(g) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें शून्य लेश्या पायी जाती है। .....

(h) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें सात योग होते हैं। .....

(i) मैं एक ऐसा अनन्तप्रदेशी स्कन्ध हूँ, जो कम से कम एक आकाश प्रदेश पर भी ठहर सकता हूँ। .....

(j) मैं अरूपी का एक ऐसा भेद हूँ जिसमें पुरूषाकार पराक्रम भी आता है। .....

प्र.5 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए – (कोई नौ) **9x2=(18)**

(a) साता वेदनीय कर्म कितने प्रकार से भोगा जाता है?

.....

.....

(b) अन्तराय कर्म की जघन्य, उत्कृष्ट स्थिति तथा अबाधाकाल लिखिए।

.....

.....

(c) उच्च गोत्र कर्म कितने प्रकार से जीव बांधता है?

.....

.....

(d) तिर्यंचायु कर्म बंध के कारण लिखिए।

.....

.....

(e) ज्ञानावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियां लिखिए।

.....

.....

(f) दूसरी नरक की आगति व गति लिखिए।

.....

.....

(g) युगलिक मनुष्यों की आगति लिखिए।

.....

.....

(h) वासुदेव की आगति व गति लिखिए।

.....

.....

(i) पहले देवलोक की आगति व गति लिखिए।

.....

.....

(j) ज्योतिषी में कितने उपयोग लेकर जाते हैं तथा कितने उपयोग लेकर निकलते हैं?

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन–चार वाक्यों में दीजिए – (कोई आठ) **8x4=(32)**

(a) अप्रत्याख्यानी कषाय की चारों प्रकृतियाँ उदाहरण सहित लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) नाम कर्म की उत्तर प्रकृतियों में गति, शरीर, रस, स्पर्श के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) शुभ नाम कर्म किन–किन प्रकारों से उदय में आता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) मनुष्य गति के 303 भेदों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) जलचर, स्थलचर, खेचर की गति लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पांच भेद कौनसे–कौनसे नरक तक उत्पन्न हो सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य कितने उपयोग लेकर जाते है कितने उपयोग लेकर निकलते है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) राग–द्वेष नामक पाप को अरूपी, चतुस्पर्शी तथा अष्टस्पर्शी इन तीनों में किस प्रकार सम्मिलित किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) गति–आगति के थोकड़े से सम्बन्धित कोई चार ज्ञातव्य तथ्य पाठ्यपुस्तक के आधार पर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....